Kav
15370
15370

* श्रीरामोजयति *

साकेत सुषमा।

लेखक—

पं० सरयूदास,

वैष्णव-धर्म-प्रचारक।

प्रकाशक—

छोटेलाल लक्ष्मीचन्द बुकसेलर,

श्रीअयोध्या।

मैनेजर—महेशप्रसाद द्वारा—

सत्यनाम प्रेस, मैदागिन, काशीमें मुद्रित।

सं० १९८२

To Jai Ram Dasji. Mani Ramji ki Chhawni Shree Ayodhya ji Fyzabad

श्री सीतारामाभ्यांनमः।

तदस्त्रं तस्य वीरस्य स्वर्ग मार्ग प्रभावन।
राम वाणासन क्षिप्त मावहत्परमां गतिम्॥

श्री वाल्मीकीय रामायणे किष्किन्धा काण्डे १७ सर्गः।

श्री रामभद्र के धनुष से छूटे हुए उसवाण ने उस बीर वालि को परमगति (श्रीसाकेतलोक) को प्राप्त कराया वह वाण स्वर्ग (दिव्यधाम साकेत वा सान्तानिक) मार्ग का प्रकाशक है वह श्री राम नाम से अंकित है (राम नामांकितैः शरैः) उससे मुमुक्षुवों को मोक्ष प्रद है॥

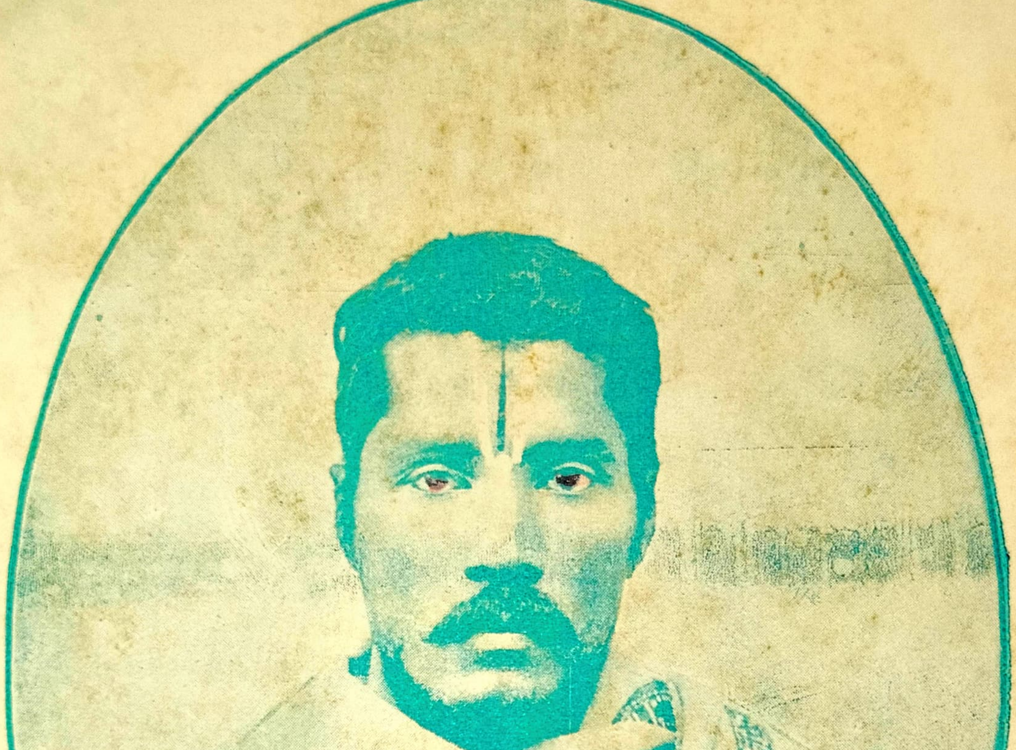

पं० श्री सरयूदास—वैष्णवधर्म प्ररोचक, बीर वैष्णव ।

श्रीसीतारामाभ्यांनमः ।

प्रस्तावना ।

साकेतलोक कौन है, कैसा है, सर्वसाधारण के लिए यह बड़ा ही कौतूहलजनक विषय है। इन बातोंको केवल विद्वान् और सत्सङ्गी उपासक ही जानते हैं। परन्तु सामान्य उपासक जिनको रहस्य-ग्रन्थोंके परिशीलनका अवसर नहीं प्राप्त हुआ है और मर्म्मज्ञ सन्तोंका संग नहीं मिला है उन्हें श्रीसाकेतके विषय में जानने की बड़ी उत्सुकता रहती है। इसीलिए "साकेत-सुषमा" नामक पुस्तक मैंने लिखी है। यदि भक्त-भावुकजनों के स्निग्ध मानसकी कुछ भी उत्सुकता इससे शान्त हुई तो मैं अपने श्रमको सफल एवं अपने को कृतार्थ समझूंगा।

सद्गुरुसदन,
पापमोचनघाट,
अयोध्याजी।
श्रीगुरुपूर्णिमा, सं० १९७८

विनीत
सरयूदास
वैष्णव-धर्म्म-प्रचारक

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्रीमते रामानन्दाय नमः

साकेत-सुषमा ।

यस्यां भाति प्रमोदकाननवरं रामस्य लीलास्पदम् ।
यत्र श्रीसरिता वरंच सरयूरत्नाचलः शोभितः ॥
ध्येया ब्रह्ममहेशविष्णुमुनिभिः आनन्ददा सर्व्वदा ।
सा ऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा ॥१॥

"यद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना । वेद पुरान विदित जग जाना ॥
अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ । यह प्रसंग जाने कोउकोऊ ॥
अवध प्रभाव जानतब प्रानी । जब उर बसहिं रामधनुपानी"

—मानस

यह प्रसङ्ग बहुत कठिन और गुप्त है । केवल भावुक लोग जानते हैं । दूसरेकी गति इसमें नहीं । वेद पुराणमें भगवत्के अनन्त-नाम-रूप-लीला-धामका वर्णन है । उनमें श्रीरामजीके नाम-रूप-लीला-धाम, चारों सर्व्वोपरि हैं । यथा—

कौशल्येयो रघुनाथ एव महापुरुषः तस्य नाम रूप धाम-लीला मनोवचनाद्यविषयाः । इति रामरहस्योपनिषद् उत्तर-खण्डे । पुनः वशिष्ठसंहितायाम् ।

रामस्य नाम रूपंच लीला धाम परात्परम् ।
एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥

इत्यादि कहा है । रहस्य ग्रन्थों में अनन्त ब्रह्मांडोंमें अनन्त वैकुण्ठ लिखा है । उनमें पाँच वैकुंठ प्रधान हैं, क्षीरसागर १

रमावैकुंठ २, कारणवैकुंठ ३, महाबैकुंठ ४, पाँचवा आदि-बैकुंठ, जो कि विरजा नदीके पार में है । इसीको त्रिपाद-विभूति महानारायणोपनिषत्में कहा है ।

मोक्षलक्षणं पादत्रये वर्तते । तस्मात् पादत्रयं परम मोक्षः । पादत्रयं परमवैकुंठः पादत्रयं परम कैवल्यमिति ।

अर्थात् जो त्रिपाद्विभूति है उसीको परम मोक्ष कहते हैं । वही परम बैकुण्ठ है, वही परम कैवल्य है । इत्यादि ।

सर्वाण्डेष्वनन्त लोकाद्यानन्त वैकुण्ठाः सन्तीति । त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषत् ।

यहीं पर आदि श्रीमन्नारायण निवास करते हैं जो श्री-मन्नारायण सब अवतारों के आदि कारण हैं और श्रीरामतत्व के परम ज्ञाता आचार्य्य हैं । यथा—

प्रथमं परवैकुण्ठे विरजायाः परे तटे ।
परो नारायणो देवो ऽवतारी परकारणम् ॥
यथार्थं सोपि जानाति तत्वं राघवसीतयोः ।
परालक्ष्मीः कृपा तस्य सा विजानाति तेन वै ॥

इत्यादि कहा है । अनन्त वैकुंठोंका परमकारण श्रीसाकेत पुरी है । यथा—

याऽयोध्या पूः सा सर्ववैकुण्ठानामेव मूलाधारा मूल-प्रकृतेः परा तत्सद्ब्रह्ममया विरजोत्तरा दिव्यरत्नकोषा तस्यां नित्यमेव सीतारामयोः विहारस्थलमस्तीति इत्यथर्वणे उत्तरार्द्धे श्रीरामरहस्योपनिषदुत्तरखण्डे ।

अर्थात् जो अयोध्यापुरी सब वैकुण्ठों का मूल आधार है, मूल प्रकृतिसे परे है, सच्चिदानन्द स्वरूपा है । विरजा नदीसे उत्तर है, दिव्य रत्न-कोषसे युक्त है, उसी

श्रीअयोध्यामें श्रीसीतारामजीका नित्य विहारस्थल है। जो श्रीसाकेतपुरी ९ मुकामों के ऊपर है। यह प्रसंगसदाशिवजी-संहिता के प्रथमाध्याय में श्रीशेषजी ने वेद भगवान् से कहा है। पृथ्वी से ऊपर महर्लोक एक कोटि योजन है। वहां से जनलोक २ कोटि योजन है, जनलोक से तपलोक ४ कोटि योजन ऊपर है। तपलोक से ब्रह्माजी का स्थान सत्यलोक ८ कोटि योजन है। जल से व्याप्त वहां से ऊपर कुमारलोक १६ कोटि योजन है। वहां से ऊपर ३२ कोटि योजन उमालोक है। उसके ऊपर श्रीशिवलोक और उमा लोक के मध्य पर्य्यन्त सप्तावरण कहाता है, भाव सप्तावरणही के भीतर सब लोक हैं।

"सप्तावरण उसे कहते हैं जिसके भीतर सब लोक हैं। पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५ त्रिधाहंकार अर्थात् रजोगुण, सत्त्वगुण, तमोगुण ६ यही त्रिधाहंकार कहे जाते हैं। इनके ऊपर सातवां मूल प्रकृति है। इसीको सप्तावरण कहते हैं। पृथ्वी १ जल २ अग्नि३ वायु४ आकाश ५ यही पंचतत्त्व क्रमसे एक के बाद एक, दश कोटि योजन ऊपर है। इसीमें मूल प्रकृति और त्रिगुणात्मक ब्रह्म मिलकर ५० कोटि योजनका ब्रह्मांड कहाता है।

यथा—

तदूर्ध्वं कोटि पंचाशत् क्रमाद्दशगुणात्परम्।
भूमिरापोनलो वायुः खमहं च त्रिधा परम्॥
महामूलेन प्रकृतेः सप्तावरणसंज्ञकाः।

इत्यादि कहा है। ब्रह्मांड का प्रमाण यहीं तक है। इसके ऊपर सब जीवों का आदि कारण जहाँ से कि सब कार्य्य

होता है। वह परम दिव्य महा वैकुंठ लोक है जो शुद्ध स्फटिक मणिके तुल्य प्रकाशमान नित्य स्वच्छ-कांति-युक्त मायासे रहित निराधार केवल शून्याकारमें विराजमान है। चारों ओर जलप्रवाह में अपने तेज से प्रकाशित भगवान् विराजमान हैं। जिस वैकुंठ लोकमें सहस्रों मणिखचित खंभ से निर्मित उत्तम उत्तम भवन बने हैं। जिनकी अलौकिक शोभा है, जहाँ चारों ओर कनक कोट बने हैं जिसके भीतर अत्यंत रमणीक कल्पवृक्षों से शोभित नाना प्रकार के बाग शोभा दे रहे हैं। जहाँ सहस्रों स्त्रीरत्न आनन्द कर रही हैं जिनके आनन्द-प्रवाह से परम पवित्र समस्तलोकपावनी श्रीगंगाजी प्रगट हुई हैं जो कि अनंत योजन लंबी और चौड़ी हैं। जहाँ सम्पूर्ण संसारके ईश्वर महाविष्णु भगवान् शेष-पर्य्यंक पर शयन किये हैं। जिनको सहस्रों शिर, नेत्र, हाथ, पैर हैं। जिन विश्वात्मा से निमेष मात्र में सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति, पालन और संहार होता है। जिस विश्वात्मा के अंश से सहस्रों ब्रह्मा, विष्णु, शिव और इन्द्रादिक देवता उत्पन्न हो कर संसार के कार्य्य करते हैं। जहाँ से संसार प्रादुर्भूत होताहै और जहां पर लय हो जाता है उसी को परमधाम वैकुण्ठ वेद में कहा है। यथा—

यत्र शेते महाविष्णुर्भगवान् जगदीश्वरः
सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥
यन्निमेषाज्जगत्सर्व्वं लयीभूतं व्यवस्थितम् ॥

इत्यादि कहा है। उसके ऊपर परम दिव्य ज्योतिः रूप निराधार दूसरा सत्यलोक है। जहां संन्यासियों के, योगियों के और हरिभक्तों के भिन्न भिन्न स्थान बने हुए हैं। यहीं पर महाशंभु अपनी सर्व्वशक्तियों के सहित निवास करते हैं।

उसके ऊपर परम दिव्य कांतियुक्त दूसरा महावैकुंठ लोक है, जहाँ पर वासुदेवादि चतुर्व्यूह अपनी माया के संग विहार करते हैं। पूर्व्वोक्त महाविष्णु, महाशम्भु और वासुदेव, तीनों श्रीरामजीके दिव्य गुण, ऐश्वर्य्य और तेजके स्वरूप हैं। यथा—

राघवस्य गुणो दिव्यो महाविष्णुस्वरूपवान्।
वासुदेवो घनीभूतस्तनुतेजो महाशिवः॥

अर्थात् श्रीराघवके दिव्य गुण महाविष्णुके स्वरूप हैं। पूर्ण ऐश्वर्य्य वासुदेव हैं। और शरीरके तेज महाशंभु हैं। इन सबके ऊपर और प्रकृतिके परे सनातन-ज्योति-स्वरूप मन बचनके परे सर्वेन्द्रियोंसे रहित श्रीगोलोक धाम है। उस गोलोकके मध्य में सर्व्वोपरि श्रीसाकेतलोक है। जहां कि मणियों से रचित सहस्रों भवन बने हैं। जहां सहस्रों दिव्य प्रमदागण विहार कर रही हैं। उस साकेत के मध्यमें एक अद्भुत कल्पवृक्ष है जिसके नीचे परम दिव्य रत्नमंडप है। उस मंडप के मध्यमें नाना रत्नों से निर्मित एक वेदिका बनी है। उस वेदिकाके बीचमें अत्यंत उज्ज्वल मंगलदायक एक रत्नसिंहासन है। जिस पर सहस्र दल-वाला एक महाकमल शोभित है। उस कमलके बीचमें एक दिव्य मुद्रिका गोलाकार शोभित है। उसके अधोभाग में दो मुद्रा भिन्न २ और है जो कि अग्निमंडल और चन्द्रमंडल से वेष्टित है तथा बिन्दु से विभूषित हैं। उस दिव्य मुद्रिका युक्त सिंहासन पर कोटि चन्द्रमा के तुल्य प्रकाशमान छत्र और चामर से आच्छादित (श्वेत जलद से अमृत बरसता हुआ सा) अपार शोभायुक्त मुक्तादामकी वितान (चाँदनी)

के तले युगलस्वरूप श्रीसीतारामजी विराजमान हैं, जिनकी किशोरावस्था है। यथा—

द्वादशाब्दवयोवित्ता नित्यानन्दविधायिनी।
षोडशाब्दपरिच्छन्न वयाः सोपि भयापहः॥

—शिवसंहिता, पटल ५, अध्याय २

अर्थात् द्वादशवर्षकी अवस्था श्रीजनकनन्दनीजी की और सोलहवर्ष की श्रीरामजीकी। यही अवस्था श्रीसीतारामजी की नित्य है। जिनके पश्चिम भाग में श्रीलक्ष्मणजी छत्र चमर लिये खड़े हैं और बाईं दक्षिण ओर श्रीभरतजी और श्रीशत्रुघ्नजी तालका पंखा लिये खड़े हैं। सामने वीरभद्र श्रीहनुमानजी सुन्दर पुस्तक बांचते हैं। और विश्वामित्र, वामदेव और वशिष्ठादिक ऋषि २४ चौबीसों अवतार सहस्रों विष्णुनारायणादि सेवामें खड़े हैं। श्रीरामभक्तों को यही ध्यान नित्य करना चाहिये।

श्रीसातेक लोक सर्व्वोपरि है। इससे परेलोक कोई नहीं है। अब यह बिचार करना है कि श्रीसाकेतपुरी और अयोध्या जी एक हो हैं या दो हैं, इनमें क्या भिन्नता है, सो वस्तुतः इन दोनों में कोई भिन्नता नहीं है। श्रीसाकेत अयोध्या एक ही को कहते हैं। केवल ऐश्वर्य्य माधुर्य्य भेद करके दो स्वरूप कहे जाते हैं। भाव एक। भोगस्थान में परा अयोध्या है। दूसरी लीलास्थान अयोध्या भूमण्डल में है। श्रीरामजी दोनों के पति हैं और दोनोंके दिव्य ऐश्वर्य्य हैं। यथा शिवसंहिताके पंचमपटलके द्वितीय अध्यायमें श्रीशिव उवाच।

भोगस्थानपराऽयोध्या लीलास्थानं त्विदं भुवि।
भोगलीलापती रामो निरंकुशविभूतिकः॥

भोगस्थानानि यावन्ति लीलास्थानानि यानि च।
तानि सर्व्वाणि तस्यैव पुरो ब्याप्यानि सर्व्वशः॥

अर्थात् जो दिब्य ऐश्वर्य्य भोगस्थानवाली श्रीअयोध्या जीमें है वही (दिब्य ऐश्वर्य्य) इस भूमंडलवाली श्रीअयोध्याजी में है। यद्यपि श्रीअयोध्याजी भूमंडलमें है तो भी मायाकृत गुणों से रहित है। इसी से श्री अयोध्याजीको श्रुति भगवती ऐसा कहती है यथा—

अयोध्या नगरी नित्या सच्चिदानन्दरूपिणी।
यस्यांशांशेन बैकुण्ठो गोलोकादिः प्रतिष्ठितः॥ १॥
यत्र श्रीसरयू नित्या प्रेमवारिप्रवाहिणी।
यस्यांशांशेन संभूता विरजादिसरिद्वराः॥ २॥

इत्यादि कहा है श्रीअयोध्याजीके अयोध्या, विमला, सत्या, आनन्दिनी, सत्यलोक ब्रह्मलोक, ब्रह्मपुरी, अपराजिता, साकेत, सातानिक, प्रमोदवन, ब्रह्मपद, लोकभिन्ना, सत्सेव्या, शुक्लभा, सप्तदुर्गा, अलंबिनी, ब्रह्मचिन्तिता, अष्टचक्रा, नव द्वारा, केलिपूर्णा, महाघोषा, सुगंधिनी, बीरसेब्या, भानुमती, अनाधत्ता, गुप्तरूपा, भावगम्या, ब्रह्मघोषा, त्रिदेवार्चा, होम धूम पूरिता, असंख्यवैभवा, अलौकिकवैभवा, अमरलोक, कोशलादि सहस्रों नाम हैं। उनमें अयोध्या १ आनन्दिनी २ सत्या ३ सत्यलोक ४ साकेत ५ कोशला ६ विमला, अपराजिता ८ ब्रह्मपुरी९प्रमोदवन१० सांतानिकलोक ११ दिब्यलोक १२ ये द्वादश नाम श्रीअयोध्याजी के प्रधान हैं। जिनमें सांता निक लोक का नाम आर्षग्रंथ श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण और महाभारतादि में लिखा है।

जैसे अयोध्याजी में प्रमोदवन होने के कारण से श्री-अयोध्या जी का एक नाम प्रमोदवन है। उसी प्रकार से

सांतानिकबन होने से श्रीअयोध्याजीको आर्षग्रन्थ श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण तथा श्रीमहाभारत में सांतानिक लोक नाम लिखा है और साकेतमें सांतानिक बन है सोस्वयं श्रीनारद पंचरात्रान्तर्गत वृहद् ब्रह्मसंहिता में लिखा है—

साकेतके पुरद्वारे सरयूकेलिकारिणी।
कोटिगन्धर्वकन्याभीरालिभिर्भाति भामिनी ॥ १ ॥
तत्र सान्तानिकं नाम बनं दिव्यं मम प्रियम्।
यत्र सीताभिधा लक्ष्मीर्वितनोति सदोत्सवम् ॥ २ ॥

श्रीअयोध्याजी में कितने आवरण हैं और किस आवरण में कौन कौन निवास करते हैं। सो भी संक्षेप से यहां दरसा देते हैं। श्रीअयोध्याजीमें अष्टादश आवरण हैं। उनमें दश आवरण तो श्रीअयोध्याजीके भीतर हैं और आठ आवरण बाहर हैं। तहाँ प्रथमावरण लोकप्रकाश अर्थात् श्रीअयोध्याजी का प्रकाश निर्गुण ब्रह्म ज्योति स्वरूप चारों ओर है जहां सोहंवादी ज्ञानी लोग जाते हैं।

यथा—

ब्रह्मज्योतिरयोध्यायाः प्रथमावरणे शुभम्।
यत्र गच्छन्ति कैवल्याः सोहमस्मीतिवादिनः ॥१॥

इसी लोक प्रकाश ब्रह्म को श्रीकबीरजी ने धोखा ब्रह्म कहा है। इसके आगे सात आवरण और कहा है। श्रीअयोध्याजी का वर्णन विस्तार से श्रीवशिष्ठसंहिता के २६ वें अध्याय में है। एक दिन श्री वशिष्ठजी से हाथ जोड़ कर श्रीभरद्वाजजी बोले कि हे भगवन् ब्रह्मपुत्र

आप वेदवेदान्त के सारज्ञाता हैं। आप जो जानते हैं वह और कोई नहीं जान सकता। इससे मैं आपसे पूछता हूँ कि वह सर्व्वोपरि भगवद्धाम कौन है जो कि ऐश्वर्य्य और माधुर्य्य का भूषण है। जहाँ सब अवतारों के आदि कारण परम दिव्य मंगल विग्रह से परमात्मा विहार करते हैं। वह तत्त्व विचार पूर्व्वक मुझसे कहिये। यह सुनकर श्रीवशिष्ठजी बोले कि हे तात! आप परम साधु हो, आपका पूछा हुआ रहस्य अति गुप्त से भी गुप्त है और परमोत्तम है। सार सिद्धान्त की भी सार वेदान्त सिद्धान्त कहते हैं। तुम सावधान होकर श्रवण करो। क्योंकि यह रहस्य अत्यंत दुर्लभ है। रामभक्त बिना अन्य किसी से नहीं कहना। भाव यह कि लोग पक्षपात समझकर इसका निरादर करदेंगे, इससे नहीं कहना चहिए। "यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ।" प्रकृति मण्डलमें जितने लोक हैं उन सब लोकोंसे ऊपर विरजा नदीके पार वैकुण्ठ लोक है जिसको परमपद कहते हैं। उससे ऊपर सच्चिदानन्द स्वरूप सब इन्द्रियोंसे परे गोलोक धाम है। उस गोलोकके मध्य में श्रीरामधाम साकेतपुरी है जो कि सबसे परात्पर धाम है। श्रीवृन्दावनादिक सब उस धामके आवरणोंमें हैं तथा सब अवतारोंके पृथक् पृथक् धाम भी बहुत हैं। यह सब धाम केवल ऐश्वर्य्यसम्पन्न हैं। इसको ऐश्वर्य्य के उपासक भक्त लोग ध्यान करते हैं और प्राप्त होते हैं, दूसरा नहीं। इसी श्रीरामजीके सनातन परम धाम साकेतके द्वितीयरूप जो कि पृथ्वीके भरतखण्डमें अयोध्या नामसे प्रसिद्ध है। वह श्रीअयोध्या अत्यन्त आश्चर्य्य सच्चिदानन्द रूप है और मनवचनसे परे है। तीनों कालमें एक रस रहने वाली है। यद्यपि श्रीअयोध्या पृथ्वीमें है। तीनों कालमें है तौ भी मायाकृत

गुणोंसे रहित हैं। जैसे कमलपत्र जलसे निर्लेप रहते हैं वैसे काल, कर्म, स्वभाव और मायाजन्य पदार्थ प्रलयादिक छै विकारोंसे वह रहित है। श्रीअयध्याके अन्शसे दोनों ऐश्वर्य्य अर्थात् सगुण निर्गुण नित्य स्वरूप प्रकाशित है, नीचे ऊपर नित्य आश्चर्य्यमय अनन्त विभव दिव्यगुण ब्रह्ममय सम्पादित है, जहां पश्चिमोत्तर और पूर्व्व तीनों ओर श्रीसरयूजी प्रवाहित हैं जिस सरयूजीके अंशांशसे विरजादि सब श्रेष्ठ नदियां शोभित हो रही हैं, जिसके दरस, परस, मज्जन, पान किये बिना मनुष्य श्रीरामजीको प्राप्त हो नहीं सकते, ब्रह्म के तुल्य क्यों न हों। यथा—

यस्यां स्नानेन पानेन दर्शनेन बिना नरः।
श्रीरामं प्राप्नुयान्नैव ब्रह्मतुल्यो भवेद्यदि॥

पूर्वोक्त विभूतिद्वय सगुण निर्गुण अर्थात् परस्वरूप श्रीमन्नारायण से और गोलोकवासी श्री कृष्ण से श्रीदशरथात्मज राम भिन्न हैं और दोनों के परम कारण हैं, जिस परब्रह्म श्रीरामजीके कलाऐश्वर्य्यसे अनन्त अवतार होते हैं और आवेशावतार ब्रह्मा, विष्णु, शिवादिक हैं, जिनके स्वरूपसे परब्रह्म प्रकाशित हैं। वही सच्चिदानन्द साकेतवासी श्रीरामजी विभूतिद्वयके स्वामी हैं। जो कि वात्सल्य सौशील्यादि अनन्त गुणोंके समुद्र हैं। जिनके चरण कमल बड़े २ राजाओंके मुकुटों से पूजित हैं। जो प्रभु वात्सल्य गुण करके परिपूर्ण पिता श्रीदशरथजी, माता श्रीमती कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रादि, भ्राता श्रीभरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न तथा अपनी प्राणप्रिया श्रीजानकीजी के सहित अनन्त स्त्रियां और सखा, सखी दास, दासी गण और वशिष्ठ, वामदेवादि मुनीश्वर सुमंत्रादि

अष्ट मंत्री तथा और भी अनेक परिकर-परिवार एवं दिव्य भोगोपचार से युक्त श्रीराम सच्चिदानन्द उस सर्वोपरि श्री साकेत लोकमें स्वतंत्र विलास और विहार करते हैं। उस साकेत लोक को छोड़कर प्रभु श्रीरामजी क्षणमात्र भी कहीं नहीं जाते हैं। उस परमैश्वर्य्य के भीतर निश्चयपूर्वक माधुर्य्यमय श्रीरामजी का अत्यन्त प्यारा श्रीसाकेत धाम है जिसके समान दूसरा कोई धाम नहीं है। इससे श्रीअयोध्याजी की रसज्ञ (रसिक) लोग सर्व्वदा उपासना करते हैं। वह अयोध्या प्राकृत-नेत्र-वाले को कभी नहीं देख पड़ती। उस पुरी को तो स्थूल, सूक्ष्म, कारण, इन तीनों शरीरोंसे रहित होकर श्रीरामभक्ति के प्रभाव से तुरीयावस्थावाले सच्चिदानन्दके स्वरूप होकर ज्ञानी लोग देखते हैं। जिस श्रीरामजीके, माया से रहित सच्चिदानन्द स्वरूप नित्य साकेत लोक के अंश से ऐश्वर्य्य सम्पन्न गोलोक-वैकुन्ठादि सनातन हुये हैं। यथा—

यदंशवैभवालोकाः वैकुन्ठाद्याः सनातनाः।

श्रीवशिष्ठजी बोले कि हे मुनीश्वर! उस अयोध्या का सप्तावरण मैं कहता हूँ, आप सावधान होकर श्रवण करें। श्रीअयोध्या के चारों ओर वहिर्देश यानी बाहर की भूमि, दश दश योजन अर्थात् ४०। ४० कोश विस्तार का जिसका घेरा है वही गोलोक कहाता है। इसीसे गोलोक के मध्य में साकेत लोक कहाता है। यहां प्रथमावरणमें महाशिव, महाब्रह्मा, महाइन्द्र, महावरुण, कुवेर और धर्म्मराज, दशों दिक्पाल, महासूर्य्य, महाचन्द्रमा और यक्ष गन्धर्व्व, सिद्ध, चारण, गुह्य, किन्नर, विद्याधर, अष्टसिद्धि नवनिधि आदि दिव्यलोक क्रमशः चारों ओर बसे हैं। इन्हीं

सब देवताओं के अंश से ३३ कोटि देवता असंख्य कोटि-ब्रह्माण्ड के कार्य कर रहे हैं। यह सब देवता प्रथमावरण में रह कर श्रीसीतारामजी महाराजकी उपासना करते हैं। इसी आवरण में भरद्वाजादिक सप्तर्षि, नारदादिक देवर्षि निवास करते हैं! द्वितीयावरण में पूर्व्व सामवेद लोक, दक्षिण अथर्वणलोक, पश्चिम ऋग्वेदलोक और उत्तर यजुर्वेद लोक हैं और इसी के अन्तर्गत छहों शास्त्र अष्टादश पुराण, अष्टादश उपपुराण, संहिता, तंत्र, रहस्य, नाटक, काव्य, कथा, कोश, ज्योतिष, पंचधाममुक्ति, ज्ञान, कर्म्म, योग, वैराग्य, यम, नियमादिक साधन, काल, कर्म्म, गुण, स्वभावादिक सब दिव्य देहधारी द्वितीयावरण में निवास कर श्रीसीतारामजी की उपासना करते हैं।

सच्चिदानन्द, ज्योतिःस्वरूप, निरंजन, निराकार, निरीह, निर्विकल्प, निर्बिशेष, नित्यानन्द, ज्ञानाकार; निर्गुण, सर्व्वसाक्षी, सर्व्वव्यापी, अनिर्वचनीय, अगोचर. अविनाशी आदि कह कर जिस ब्रह्म को वेद पुकारते हैं जो कि सन्यासियों के; ज्ञानियों के और योगियों के लयास्पद हैं अर्थात् इन लोगों की गति यहीं तक है, आगे नहीं। यह निर्गुण ब्रह्म तृतीयावरण में निवास करते हैं। चौथे आवरण में पूर्व श्रीमहाविष्णुलोक, दक्षिण श्रीरमा वैकुन्ठ, पश्चिम श्री अष्टभुज भूमा पुरुषका लोक और उत्तर महाब्रह्म लोक, महा शंभुलोक है। इसी के भीतर चौवीसों अवतारों के भिन्न भिन्न लोक बने हैं। यहीं से कल्प कल्प में सब अवतार भूमंडल में हुआ करते हैं और उसी आवरण में मथुरा, द्वारका, काशीपुरी, उज्जैन, कांची, हरिद्वार आदि पुरियां निवास करती हैं। ये सब श्रीअयोध्यापुरी की सेवा करती हैं।

और विष्णु नारायणादिक तथा सर्व्वावतार श्रीरामजी की उपासना करते हैं। पांचवें आवरणमें सर्व्वाश्चर्य मय सच्चिदानन्दस्वरूपा श्रीमती मिथिलापुरी पूरबकी ओर है। वह श्रीमिथिलापुरी स्वर्णमयी नाना रत्नों से निर्मित है और विविध प्रकार के विमल विमान चित्र विचित्र ध्वजा-पताकाओं से शोभित है। और चारों तरफ़ सप्त दुर्ग तथा नाना प्रकारके बागों से शोभित है। उस श्री मिथिला के अधिपति प्रतापवान् श्रीमान् महाराज शिरकेतु जो कि वात्सल्यादि गुणों के सागर श्रीरामजी के श्वशुर हैं। वह श्रीशिरकेतु महाराज निमिवंशियों के ध्वज रूप हैं। और चतुरङ्गिणी सेना से युक्त, वेद-वेदान्तके सार जाननेवाले तथा सर्व्व शास्त्रों के पारंगत धनुर्विद्याके ज्ञाताओं मे श्रेष्ठ सर्व्व ऐश्वर्य करके सम्पन्न, दासी दास गणों से नित्य सेवित हैं। यह श्रीमिथिलापुरी १३ आवरणों से युक्त है। अयोध्या और मिथिलामें किंचित भेद नहीं है। जो विभव श्री-अयोध्याजी में है वही विभव श्रीमिथिलाजी में है। यथा—
वृहद्विष्णुपुराणे मिथिला माहात्म्ये १ अध्याये।

एवमेवद्वयो रैक्यं वेदज्ञैः परिनिश्चितम्।
यथाऽयोध्यापुरी नित्या मिथिलापि तथा स्मृता॥
सर्व्वैश्वर्य्यगुणैर्वापिनायोध्यातः पृथङ्मता।
आयोध्यका यथा नित्या सर्व्वमङ्गलरूपिणः॥ २॥
तथैव मिथिला नित्या सर्वमंगलविग्रहा॥

इत्यादि

श्रीअयोध्याजीके दक्षिण दिशामें महा उत्तम पर्वतोमें श्रेष्ठ सच्चिदानन्द स्वरूप श्रीचित्रकूट पर्वत शोभित हैं जोकि

सप्तावरण से युक्त हैं, जिसमें श्रीसीतारामजी नित्य विहार करते हैं। उस कामदगिरि के शिखर नाना रत्नमय फल और पुष्पों के भारविनम्र वृक्षों से युक्त हैं। और समूह लताके वितान से तन रहे हैं। जिन पर भ्रमर गुञ्जार करते हैं और उन्मत्त कोकिलगण तथा नाना प्रकार के पक्षीगण शब्द कर रहे हैं। जहां मयूर नृत्य कर रहे हैं। निर्मल जल के झरने झर रहे हैं। एवं श्रीजानकी जी के सहित श्रीरघुनन्दनकी लीला, रसकेलि विस्तार करने के लिए सब आनन्द हो रहा है। जिस कामदगिरि के चारों ओर सच्चिदानन्द रूपा नाना रत्नमय विचित्र एकसी यानी बराबर पृथ्वी है। वह सम भूमि चारो ओर दिव्य मंगलमय बनों से शोभित है। जहां अत्यन्त सुन्दर मन को रमानेवाली श्रीमती मन्दाकिनी जी बह रही हैं। जिसके जल निर्मल मोती के समान और वज्र वैदूर्य, मणि के समान अद्भुत बालुका (रेती) है। जिसमें चार प्रकार के कमल खिले हैं उस पर मधु के लोभी भवँरे गूँज रहे हैं। जहां नाना प्रकार के पक्षीगण चित्र विचित्र दोनों तटों पर मधुर मधुर शब्द कररहे हैं। जिस मन्दाकिनी के दोनों तटों पर स्वर्ण स्फटिक मणियों के विचित्र घाट बने हैं। और दोनों तट नाना प्रकार के चित्र विचित्र लता पुष्पो के कुञ्जो से शोभित हैं, बहुत रमणीक सहस्रों कुञ्ज भवन बने हैं। यह सब श्रीसीतारामजी के नित्य विहार के लिये बने हैं। उस चित्रकूट के दर्शन करने से मनुष्य कल्याण के भागी होते हैं यथा वाल्मीकीय रामायणे—

यावदा चित्रकूटस्य नरः शृंगाण्यवेक्षते।
कल्याणानि समाधत्ते न मोहे कुरुते मनः॥

इत्यादि कहा है श्रीअयोध्याके पश्चिम भागमें परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दजीका नित्यसच्चिदानन्द स्वरूप आश्चर्यमय श्रीवृन्दावन धाम है। जहां चारों ओर सम भूमि चित्र विचित्र दिव्य रत्नमयी बनी है। वह भूमि दिव्य वृक्ष लता से युक्त है। जिसमें नाना प्रकार के कुञ्ज भवन बने हैं। नवीन पल्लव स्निग्ध फल और पुष्पों से शोभित है जहाँ भ्रमरगण उन्मत्त होकर रसपान करते हैं, पक्षिगण शब्द कर रहे हैं। मयूर गण नृत्य कर रहे हैं। जिस वृन्दावन में गोवर्द्धन पर्वत दिव्य रत्नमय रचित है। और लता वृक्ष तथा कन्दरा और झरना से शोभित है। जहां श्रीकृष्णजी की प्राणप्यारी नदियोंमें श्रेष्ठ पुण्यरूपी श्रीयमुनाजी वह रही हैं जिसका नीलमणिके समान श्यामजल समूह तरंगों से युक्त है। जिसमें चार प्रकार के कमल खिले हैं। पक्षिगण उन्मत्त होकर शब्द कर रहे हैं। जिसके दोनों तट समूह रत्नों से खचित हैं। जिनमें स्वर्णरत्नमयी वालुका शोभा दे रही है गोपी-गोपगण नित्य गौ-बालकों के सहित, श्रीनन्द, यशोदा तथा भ्राता बलदेव और गोपकन्या सखा सखियों के सहित तथा प्राणप्यारी श्रीराधिकाजी के सहित उस वृन्दावन में पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र जी नित्य रासमण्डल में विहार करते हैं। और श्रीराधिकाजी के मुखसुगन्ध के लोभ से भ्रमरगण लुब्ध हो रहे हैं। ऐसाही नारद पंचरात्रान्तर्गत बृहद्ब्रह्म-संहितामें कहा है। यथा—

साकेतपश्चिमे पार्श्वे गोलोकाख्ये मनोरमे।
महत्कल्पतरूद्यान मथुरेति पुरी मता ॥
कोटियोजनविस्तीर्णा नित्योत्सवसमाकुला।
वृन्दावनं गोकुलं च तत्पार्श्वे चतुरानन ॥

ऊर्ध्वन्तु सर्व्व लोकेभ्यो गोलोके प्रकृतेः परे।
वाङ्मनोगोचरातीतं ज्योतिरूपं सनातनम् ॥

इत्यादि कहा है। श्रीअयोध्याके उत्तर भागमें महा बैकुंठ लोक है। जिसको हमारे आचारी वैष्णव मूल बैकुण्ठ कहते हैं। इसीको महाविष्णुका स्थान निश्चय पूर्वक बेदमें कहा है।

यद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना।
बेद पुरान विदित जग जाना॥
अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ।
यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ॥

सो यही श्रीवैकुण्ठ लोक है जहाँकी भूमि सर्वत्र चारों ओर रत्नसे जटित स्वर्णमयी है। जहां सहस्रों बावली कुण्ड तड़ाग और विविध भांति के दिब्य बाग शोभा दे रहे हैं। जहां चारों ओर श्रीमती विरजानदी कमल पुष्पों से शोभित है। जिसमें स्वच्छ स्फटिकमणिसा जल समूह तरंग से लसित है, जिसकी बालुका रत्न बज्र स्फटिकमणिके तुल्य चमक रही है। जिसमें चार प्रकार के कमल खिल रहे हैं और पक्षीगणोंके कोलाहलसे पूरित हो रहे हैं। जहां पार्षदों के निवासके लिये नाना प्रकारके उत्तम भवन बने हैं। एकसे एक विलक्षण चित्रशाला बनी हैं। जिसमें स्वर्ण मणियोंकी सहस्रों झालरैं लगी हैं। बहुत से चित्र विचित्र उच्च ध्वजा पताका रत्न जड़ित स्वर्णमयी शोभा दे रही है। तथा सहस्रों स्त्रीरत्नों से वह बैकुण्ठलोक प्रकाशित हो रहे हैं। स्वर्णरत्न से खचित बहुत विस्तारमें स्थान है जहां प्रकाशमय अनेकों कनक भवन शोभित हैं। वह भवन सहस्रों स्वर्ण कलश और चित्र विचित्र ध्वजा पताकावों से शोभित है। जिस

भवनमें मोतियों के झालरयुक्त बितान और अनेक झरोखे लगे हैं। जिनमें बज्रमणिका कपाट लगा है और मणियों के सहस्रों स्तंभ अर्थात् गरुड़ खम्भ खड़े हैं। काञ्चनके आँगन सर्व्वरत्नों से भूषित हो शोभा दे रहे हैं। उसके मध्य में शेष पर्य्यंक (पलंग) के ऊपर नित्य शुद्ध मंगल बिग्रह किशोर अवस्था यानी १६ वर्ष की नित्य अवस्थावाले कौशील्य वात्सल्यादि गुणों के सागर श्रीमन्नारायण बिराजते हैं। यही नारायण सब अवतारों के आदि कारण हैं। और श्रीरामतत्व के ज्ञाता आचार्य हैं। वह श्रीमन्नारायण घन (मेघ) के समान श्याम हैं और चतुर्भुज हैं, पीताम्बर से शोभित हैं, श्याम स्निग्ध (चिक्कन) घुंघुरवारी अलकावली से युक्त मन्द स्मित जिनके मुख कमल शोभित हो रहे हैं। श्रीवत्स कौस्तुभमणि और सुगन्धि युक्त बनमाला तथा किरीट, कुण्डल, अंगद (बाजूबन्द) कङ्कण, बैजयन्ती माला, उपवीत, हार, मुद्रिका, नूपुर, स्वर्ण सूत्र, कांची (करधनी) आदि भूषणों से श्रीहरि भूषित हैं। शंख, चक्र, गदा, पद्म, आयुधों को धारण किए हैं और श्रीमती श्रीदेवी, भूदेवी, लीलादेवी से शोभित हैं। जिनके सामने विष्वक्सेनादि नित्य मुक्त और कैवल्यनिष्ठ ज्ञानी शुद्ध सात्विक सबही श्याम सुन्दर चतुर्भुज दिव्यगन्ध लिप्तांग कमलदल से लोचन पीताम्बर धारण किये सर्वायुध युक्त दिव्य ललनागण से सेवित सुन्दर केशवाले दिव्यालङ्कार भूषित श्रीलक्ष्मी जी के सहित श्रीमन्नारायण की रात्रि दिन सेवा करते हैं। जनकपुर, चित्रकूट, श्रीवृन्दावन, और महावैकुण्ठ यह सब श्री साकेत के पंचमावरण में शोभित हैं। यथा—

मिथिला चित्रकूटश्च श्रीमद्वृन्दावनं तथा।
महावैकुण्ठमेतद्धि पंचमावरणे मुने॥

छठवें आवरणमें परमानन्द के समूह आश्चर्यमय श्रीअयोध्या के चारों ओर २४ योजन अर्थात् ९६ कोश पूरब, ९६ कोश दक्षिण, ९६ कोश पश्चिम और ९६ कोश उत्तर आनन्दमय सर्वोपरि प्रकाशमान सच्चिदानन्द स्वरूप त्रिगुणातीत माया से रहित और मन बचन से परे श्री-प्रमोदवन है। वह प्रमोदवन श्रीसीतारामजी को अत्यन्त प्यारा नित्यलीला रस को बढ़ाने वाला है। जिसकी भूमि चारों ओर से जाम्बूनदमयी अर्थात् अद्भुत स्वर्णमयी प्रकाश कर रही है। जो कि सच्चिदानन्दरूप विलक्षण परमानन्दकी बढ़ाने वाली है। कहीं चित्र विचित्र चन्द्रकांत पत्थर लगे हैं कहीं कहीं स्फटिकमणि और कहीं पद्मरागमणि कहीं कहीं वज्रमणि खचित हैं। कहीं इन्द्रनील मणि से कहीं वैदूर्य्य मणि, कहीं कहीं रत्न कहीं मुक्ता से निर्मित कहीं मूंगा से सुसज्जित कहीं नीलममणि पीतमणि कहीं अरुणमणि कहीं श्वेतमणि कहीं कहीं स्यमन्तकमणि कहीं चिन्तामणि इसी प्रकार से चित्र विचित्र मणिय से श्रीप्रमोदवनकी भूमि रचित है जिससे कि अधिक प्रिय प्रकाश होता रहता है। श्रीवशिष्ठजी भरद्वाजजी से बोले कि हे मुनि, उस प्रमोदबनके चारों ओर पर्वत हैं उनके नाम हमसे सुनो (१) शृङ्गार पर्वत (२) मणिपर्वत, (३) लीला पर्वत और (४) मुक्ता पर्व्वत है। यही चार पर्व्वत हैं। जो अपनी श्रीकांति से दशों दिशाओं को प्रकाशित कर रहे हैं। इन चारों पर्वतों पर चार शक्तियाँ निवास करती हैं आल्हादिनी पराशक्ति तो पूर्वदिशा में सूर्य की तरह प्रकाश

करती है । उसमें शृङ्गारपर्व्वत केवल नीलमणि से शोभित है। और दक्षिणदिशा में जो मणिपर्व्वत है सो पीतमणिमय प्रकाशित है जिस पर श्रीभूदेवी शोभा देती हैं। पश्चिमदिशा में जो लीलाद्रि है वह लीलादेवी की ललित कांति से श्री रामजी के प्रीतिवर्द्धक लालरत्नवाले मणियों से प्रकाशित है जिसको श्रीदेवी श्रीसीतारामजी के लीलार्थ भूषित करती हैं । और श्रीअयोध्याजी के उत्तरदिशा में मुक्ताद्रि है जो कि श्वेतचन्द्र कांतमणि से शोभित है । जिसको देवी श्री श्रीसीतारामजी के लीलार्थ सर्व्वप्रकारसे भूषित कर रही है। ये चारों पर्व्वत चित्र विचित्र पुष्प लता वितान से मण्डित हैं। जिनमें अमृत के समान स्वादवाले बहुत फल लगे हैं । नवीन पल्लव से युक्त जिस पर भँवरा रस के लोभ से उन्मत्त होकर गुंजार कर रहे हैं । रङ्ग रंग के पक्षीगण नीलकंठ, शुक, पिक, मयूरादि कल्लोल करते हैं। उन्मत्त कोकिलाके मधुर शब्दोंसे दशों दिशाएँ पूरित हो रही हैं। और चित्र विचित्र स्निग्ध नाना प्रकारके वृक्ष लगे हैं जिनसे मधु नित्य चूते हैं । चारों पर्व्वत उच्च शिखरों से और नाना प्रकार के झरना से शोभित हैं । उस प्रमोदवन में अत्यंत रमणीक द्वादश वन हैं । उन सबके नाम सुनो। श्री शृङ्गार वन १ विहार वन २ तमाल वन ३ रसालवन ४ चंपकवन ५ चन्दनवन ६ पारिजातवन ७ उत्तम दिव्य अशोकवन-८ विचित्रवन ९ कदंबवन १० तथा महारमणीक कामवन ११ श्रीनागकेशरवन १२। यह द्वादशबन हैं यथा—

श्रीशृङ्गारवनं भ्रातं विहारवनमद्भुतम्।
तमालं च रसालं च चम्पकं चन्दनं तथा॥

पारिजातं वनं दिव्यमशोकवनमुत्तम्।
विचित्राख्यं वनं कांतं कदम्बवनमेव च॥
तथा ऽनंगवनं रम्यं बनं श्रीनागकेशरम्।
द्वादशैतानि नामानि वनानां कथितानि ते॥

इन सब बनोंकी कांति नील मणियोंके समान श्याम है। महा गंभीर सघन नित्य नवीन चित्र विचित्र विविध प्रकार के जिसमें वृक्ष लगे हैं। सब वृक्ष आनन्दमय किशोर काम से सुन्दर स्निग्ध कोमल छोटे छोटे मनोहर नवीन पत्र फूल फलों से युक्त, वायु से चलायमान, नील, हरित, लाल, दिव्य सुगंधित पांच प्रकार के पुष्पों से शोभित हैं। प्रमाणसे रहित नित्य से नित्य नवीन बहुत से प्रफुल्ल फल फूलों करके सब वृक्षों की शाखाएँ पृथ्वी में लोट रही हैं। जिस वन में दिव्य स्वर्णरत्नों के समूह चित्र विचित्र अनेकों वेदिका बनी हैं। उस बेदिका पर पंच प्रकार के पुष्पों से निर्मित वितान बने हैं। कोई स्वर्ण के त्वचासे युक्त कोई मुक्ता पुष्पोंसे भूषित है। किसी २ में चिन्ता मणि के फल लगे हैं। नील मणि के पत्तों से शोभित हैं। नाना पुष्पों के रजसमूह से लिप्तांग भ्रमर गण आनन्द कर रहे हैं, रस पान कर रहे हैं, गिर रहे हैं, दौड़ रहे हैं, पुष्पों के रस पीकर उन्मत्त हो रहे हैं। एक वृक्ष से रस लेकर दूसरे वृक्षों पर जाते हैं। एवंभ्रमरी गणों के साथ भंवरा गण चारों ओर क्रीड़ा करते हैं। जिस वन में सारिका, शुक, कोकिला आदि पक्षी मधुर २ शब्द कर रहे हैं। कहीं पारावत कहीं कपोत कहीं चातक कहीं श्यामा कहीं ढेक कहीं महोष यानी नाना प्रकारके पक्षीगण चित्र विचित्र शब्द कर रहे हैं। जहां सहस्रों चन्द्रमुखी आनन्द कर रही हैं। बहुत से हंस मुक्ता खाते हैं

और मधुर शब्द कहते हैं। क्रौंच, चकोर, कल हंस, राजहंस बाल हंस, सारस और चित्रविचित्र अनेकों पक्षीगण अपनी सुन्दर स्त्रियों के सहित वन में विहार करते हैं। एवं नाना प्रकार के शब्दों से चारो ओर वन पूरित हो रहे हैं। वे पक्षी-गण अमृतको भी विरादर करने वाले सुन्दर स्वाद वाले विविध प्रकार के फलों को खाते हैं। उन्मत्त मयूरगण अपनी मयूरी के सग नृत्य करते हैं। वह वन कुन्द, मालती, चमेली, बेला आदि पुष्पों के समूह से शोभित हैं। लवंग लतिका, मालती, जूही, तथा केवड़ा, केतकी, बासन्ती, स्थल कमल, सेवती तथा और भी अनेक चित्र विचित्र लता अपने अपने समूह पुष्पों से युक्त सम्पूर्ण वनों को दिव्य सुगन्ध से वासित कर रहे हैं। उस बनमें सदा शीतल सुगन्ध मन्द तीन प्रकार के पवन परमानन्द के बढ़ानेवाले चल रहे हैं। और नाना पुष्पों की रज से भँवरागण रंजित हो रहे हैं। कोई पीत कोई नील कोई हरित कोई रक्त कोई श्वेत एवं वृक्षोंसे गिरे हुए पञ्च पुष्पों से पृथ्वी छिप रही है। उस प्रमोद वन के द्वादश वनोंमें निर्मल जल से पूरित पुष्करिणी तथा तलाब सुन्दर रमणीक बने हैं जिसमें चित्र विचित्र मणिके सोपान लगे हैं। तालाब के ऊपर चारों ओर अनेक प्रकार के पुष्पलता और वृक्ष लगे हैं। जिसमें चार प्रकार के कमल खिले हैं। भंवरागण पक्षि-गण गूंज रहे हैं। पुष्पोंके सुगन्ध से भ्रमरगण उन्मत्त होकर मधुर ध्वनि कर रहे हैं। और भी अनेकों तीर्थ सम्बन्धी कुण्ड बने हैं जिनमें निर्मल जल भराहै। अनेक प्रकार के कमल खिले हैं। शुक हंसादि पक्षी विहार कर रहे हैं। किसी किसी वनमें उत्तम मन्दिर, रमणीक कुञ्ज बने हैं। बीच

बीचमें नाना प्रकारकी प्रकाशमान चित्र विचित्र वेदिकाएँ बनी हैं। वह वेदिका स्वर्ण और चन्द्रकान्तमणि से बनी हैं। कोई चिन्तामणिसे, कोई इन्द्रनीलमणिसे, कोई पीत मणिसे, कोई मूँगासे, कोई बज्रमणिसे. कोई पद्मराग मणि से, कोई वैदूर्य्यमणिसे, कोई स्यमन्तक मणिसे, कोई हरित मणि से, कोई मोतीसे, कोई कोई सब मणियों से मिला कर चित्र विचित्र बनी हैं। वे सब वेदिकाएँ अत्यन्त सुन्दर और प्रकाशमान हैं। वह मुक्ता दामके वितान से शोभित हैं जिनपर अनेकों दिव्य रत्न जटित दर्पण शोभित हैं मुक्ता पुष्पलता से युक्त विविध कुञ्जभवन बने हैं। जिनमें अनेक प्रकारके पक्षिगण शब्दकर रहे हैं। जहां वसन्त ऋतु सर्व्वदा निवास करते हैं, कहीं वर्षा ऋतु है, कहीं शरद्‌ऋतु, कहीं हिम ऋतु, कहीं शिशिर ऋतु, कहीं ग्रीष्म ऋतु है। एवं छहों ऋतु अपने अपने ऐश्वर्य लिये सर्व्वदा निवास करते हैं। देशी, देवगिरि, वैराड़ी, और टोडी, ललित, हिंडोली, इन छ रागिनी के सहित मूर्तिमान् वसन्त राग वसन्त ऋतु में निवास करता है। भैरवी, गुर्जरी, रेवा, गुणकरी, वंगाक्षी और बहुली, यह छ रागिनी हैं। इन सब स्त्रियों के सहित भैरवराग अद्भुत स्वरूप धारण करके ग्रीष्म ऋतु में सर्वदा निवास करता है। मल्लारी, सोरठी, सावेरी, कौशिकी, गांधारी, हरि श्रृंगार इन छ रागिनी के सहित सुन्दर स्वरूप धारण कर के मेघ राग वर्षाऋतु में निवास करता है। विभासी, भूपली, मालश्री, पटमञ्जरी, बड़हंसी और कर्नाटी यह छ इन छवों रागिनी अपने और पुत्र पौत्रादि परिवारों के सहित सुन्दर रूप वाला पञ्चम राग माल-

कोश शरदृऋतु में निवास करता है। कामोदी, कल्याणी, आंभीरी, नाटिका, सालंगी और नट मञ्जरी, यह छ रागिनी जो सुन्दर प्रीति के देने वाली हैं, इन सब स्त्रियों के सहित दिव्य रूप धारण करके वृहन्नाट (दीपक राग) हिम ऋतु में निवास करता है। मालवी, त्रिवनी, गौरी, केदारी, मधु माधवी और पहाड़िका ये छ रागिनी श्रवणको प्यारी हैं। इन सब रागिनियों के समेत मूर्तिमान् नित्य श्रीराग सपरिवार शिशिर ऋतु में निवास करते हैं। ये छवों राग पुरुष हैं और ३६ रागिनी स्त्री हैं। इन परिवारों के सहित छवों राग द्वादशों बन में सर्वदा निवास करते हैं। ये सब श्रीअयोध्या के छठवें आवरण में निवास करते हैं। श्रीवशिष्ठजी कहते हैं कि हे भरद्वाजजी, यह गुप्त रहस्य केवल आप की भक्ति से ही प्रसन्न हो कर मैंने कहा है। इसके आगे सातवें आवरण में लोकपावनी श्रीमती सरयूजी बहती हैं। जो सब नदियों की आदि कारण हैं और सब लोकोंको पवित्र करने वाली हैं। सच्चिदानन्दस्वरूपा हैं और श्रीसीताराम जी को अत्यन्त प्यारी हैं। जिनके अन्श से सम्पूर्ण लोक में विख्यात विरजादि उत्तम नदियां प्रगट हुई हैं। जिन श्रीसरयूजी के नाम स्मरण करने ही से मनुष्य संसारवन्धन से मुक्त हो कर दिव्य शरीर को प्राप्त कर के मंगल विग्रह श्रीसीतारामजी को प्राप्त होते हैं। यथा—

जा मज्जनते विनहि प्रयासा।
मम समीप नर पावहिं वासा॥

इत्यादि श्रीगोस्वामीजी ने कहा है। वह श्रीसरयूजी निर्मल जल, प्रकाशमान गम्भीर तरंगों से शोभित है। जिनके प्रकाश से दशों दिशाएँ प्रकाशित हो रही हैं। जिस

श्रीसरयूजीके तरंगमालने शरदऋतुके चन्द्रकिरणोंको तुच्छ कर दिया। जिसके जलके स्वादने अमृतको भी फीका कर दिया। जिसकी कान्ति कुन्द पुष्प सी उज्वल है। जिस श्रीसरयूजी में नील, श्वेत, पीत, रक्त एवं चार प्रकारके कमल खिले हैं। जो श्रीसरयूजी अनेकों दिव्य सुगन्ध से सुगन्धित हो रही हैं। जिस श्रीसरयूजीमें हंस, क्रौंच, चकोर, चक्रवाक, सारस तथा और भी अन्य पक्षीगण अपनी स्त्रियोंके सहित विहार करते हैं। कमलों पर भवँरा गण गुञ्जार कर रहे हैं। जिस श्रीसरयूजीके दोनों तट चन्द्रकान्त मणियोंसे पद्मराग, कौस्तुभमणि, वज्रमणि, इन्द्र नील मणि, स्यमन्तकमणि, चिन्तामणि, वैदूर्यमणि, गजमुक्ता, स्फटिकमणि, माणिक्य और भी अनेकों रत्नों से सुसज्जित है। ऐसही पूर्वोक्त सब मणियों से रचित अनेकों तीर्थ बने हैं। श्रीसरयूजीके निर्मल जल पूर्वोक्त सब मणियोंके प्रतिबिम्ब नाना प्रकारके प्रकाशित करते हैं। वज्र मणि, स्फटिक मणि, मुक्ताओंके बारीक चूर्ण सोई श्रीसरयूजी में बालुकाएँ हैं। जो बालुकाएँ चन्द्रकान्त मणियों की तरह दोनों तट पर प्रकाश कर रहे हैं। ऐसी श्रीसरयूजी सुन्दर परमानन्दके देने वाली श्रीसाकेतके सप्तावरणमें हैं। श्रीसरयू श्रीसीतारामजीको अत्यन्त प्यारी हैं। इसके आगे श्रीअयोध्याजी के चारों ओर कनककोट (क़िला) शोभित है। उसके अन्दर श्रीअयोध्यापुरी विराजती हैं। जिसमें १० आवरण हैं और सब रानियोंके मन्दिर सब भ्राताओंके भिन्न भिन्न बने हैं। सो यहां नहीं वर्णन किया गया है यह सब अन्तःपुरका रहस्य है। भावुकोंके द्वारा जान पड़ता है। यह श्रीअयोध्याजीका महत्त्व जो कोई श्रवण और मनन

करेंगे वे श्री सीतारामजीके प्यारे होंगे । इस श्रीअयोध्याजी के माहात्म्य अद्भुत है ।

अमरा मरणमिच्छन्ति का कथा इतरेजनाः ।
नैवात्र कर्म्मणा भोगो रामरूपो भवेन्नरः ॥
चार खानि जग जीव अपारा ।
अवध तजे तनु नहिं संसारा ॥

अर्थात् श्रीअयोध्याजी में देवता लोग भी मरनेकी इच्छा करते हैं, औरों की क्या कथा है । इसीलिये "ब्रह्मादि प्रशंसत अवध वास । कलकीरति गावत तुलसिदास ॥" इत्यादि श्री गोस्वामीजी ने कहा है । श्रीअयोध्याजी में शुभाशुभ कर्म्म भोग नहीं है । जो कोई मरते हैं, वे श्रीरामरूप होजाते हैं। श्रीअयोध्याजी में नवद्वार हैं। उसमें चारद्वार प्रधान हैं। तहाँ चार द्वारपाल हैं। यथा सदाशिवसंहितायाम् प्रथमाध्याये ।

पश्चिमां पाति धर्म्मात्मा राक्षसेन्द्रो विभीषणः ।
पूर्वमावृत्य विश्वात्मा सुग्रीवस्तैजसात्मकः ॥
उत्तरं रक्षति वीरो वालिपुत्रो महाबलः ।
दक्षिणं तु सदा पाति हनुमान् रामवत्सलः ॥

पुनः, वृहद्ब्रह्मसंहितायाम् ३ पादे दशमाध्याये ।

पूर्व्वद्वारे तु सुग्रीवो दक्षिणे पवनात्मजः ।
पश्चिमे राक्षसाधीशो बालिपुत्रस्तथोत्तरे ॥

अर्थात् पश्चिम द्वारके रक्षक धर्म्मात्मा श्रीविभीषणजी हैं उत्तर द्वारके वालिपुत्र श्रीअंगदजी, पूर्व्व द्वारके रक्षक श्री सुग्रीवजी और दक्षिण द्वारके रक्षक श्रीहनुमान्जी हैं। जहाँ परम दिव्य सांतानिक वन है, जिसमें श्रीसीतारामजी नित्य विहार करते हैं। इसी दिव्य वनके होनेसे श्रीअयोध्या

जी को सांतानिक लोक भी कहते हैं जिसको श्रीगोस्वामीजीने श्रीरामायण में कहा है कि—

हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई ।
गये जहाँ सीतल अमराई ॥

सो श्रीसाकेत ही लोक है । यह श्रीअयोध्याजी का माहात्म्य श्रीवशिष्ठसंहिता के अनुकूल वर्णन किया गया है । कहीं कहीं प्रसंग पाकर और २ ग्रन्थोंके प्रमाण भी दिये गये हैं । ग्रन्थविस्तारके भयसे संक्षेप में लिखा है । जहाँ कहीं त्रुटि हो सज्जन लोग क्षमा करेंगे । इत्यलम् ।

एकादशरत्न ।

पण्डित श्रीसरयूदासजी महाराजका संग्रहीत ११ पुस्तकें श्रीवेदार्थ प्रकाश रामायण १ श्रीउपासनात्रय सिद्धान्त २ श्रीवैष्णवकुल भूषण ३ श्रीवैष्णवधर्म दिवाकर ४ श्रीराममन्त्र परम वैदिक सिद्धान्त ५ श्रीरामकृष्णलीलानुकरण सिद्धान्त ६ कलिपाषण्डोदय ७ श्रीरामपटल भाषाटीका ८ श्रीसतपञ्च चौपाई मनोहर ९ श्रीविश्वम्भरोपनिषद् भाषाटीका १० यह सब ग्रन्थ अनेक श्रुतिस्मृति, पुराणों के संग्रह हैं, सबकी उत्तम भाषाटीका है इस लिए समस्त वैष्णवोंके देखने योग्य हैं । इसके अतिरिक्त और भी धर्म्म सम्बन्धी अनेक प्रकार की पुस्तकें हमारे पास यथोचित मूल्यमें मिलती हैं । सूचीपत्र मंगाकर देखिए ।

पुस्तक मिलने का पता—

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द बुकसेलर,
श्रीअयोध्याजी ।

मुद्रक—महेशप्रसाद, सत्यनाम प्रेस, मैदागिन बनारस सिटी ।

15370